SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखण्ड राज्य निर्माण के संबंध में ए. के. राय के विचारः एक ऐतिहासिक विश्लेषण

नवनीत कुमार दांगी, पी–एचडी, इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नवनीत कुमार दांगी, पी–एचडी
E-mail : dangijee1996@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/12/2025
Revised on : 22/02/2026
Accepted on : 03/03/2026
Overall Similarity : 00% on 23/02/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Feb 23, 2026 (06:59 AM)
Matches: 0 / 2560 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

झारखण्ड राज्य निर्माण में मार्क्सवादी विचारक और धनबाद के पूर्व सांसद रहे ए. के. राय (अरुण कुमार राय) का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने न सिर्फ झारखन्ड आन्दोलन का नेतृत्व किया बल्कि आन्दोलन को स्पष्ट विचारधारात्मक आधार प्रदान किया था। ए. के. राय के प्रयास से खासकर समाज के वंचित वर्ग मजदूरों, किसानों, और विस्थापितों के बीच झारखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलन को काफी बल मिला। उन्होंने मार्क्सवादी सिद्धांतों के आधार पर झारखण्ड राज्य निर्माण को जायज ठहराने का प्रयास किया था और इसमे वे सफल भी रहे। ए. के. राय ने ही सबसे पहले झारखण्ड क्षेत्र की तात्कालिन हालात का विश्लेषण करते हुए आंतरिक उपनिवेशवाद की विचारधारा का विकास किया जो झारखण्ड निर्माण के लिये मील का पत्थर साबित हुआ। इस विचारधारा के माध्यम से वे झारखण्ड राज्य निर्माण की आवश्यकता क्यों है? इस पर खुली बहस छेड़ दी। उन्होंने आन्दोलन के प्रमुख कारकों का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया और असमान विकास, क्षेत्रिय असमानता, विकृत राष्ट्रीयता, जातिगत समस्या को झारखण्ड आन्दोलन का मूल प्रेरक शक्ति माना।

मुख्य शब्द

आंतरिक उपनिवेशवाद, क्षेत्रिय असमानता, विकृत राष्ट्रीयता, दलित क्रांति, जनक्रांति, मार्क्सवादी.

झारखण्ड आन्दोलन के प्रमुख आन्दोलनकारी, मार्क्सवादी समन्वय समिति, बिहार कोलियरी कामगार यूनियन, किसान संग्राम समिति आदि कई संगठनों के संस्थापक ए. के. राय न केवल जमीनी आन्दोलन से जुडे रहे बल्कि वे एक साम्यवादी विचारक भी थे। वे कार्ल मार्क्स, लेनिन तथा माओ की विचारधारा से काफी प्रभावित

थे। मार्क्स के दर्शन से प्रभावित ए. के. राय तात्कालिन समाज के हालात को समझते हुए जन–आन्दोलन के द्वारा सम्पूर्ण झारखण्ड में अपनी धमक बनाई।[1] उन्होंने मार्क्स की शोषक और शोषित की विचारधारा को झारखण्ड पर लागू किया और यह समझाने का प्रयास किया कि किस प्रकार औद्योगिकीकरण के नाम पर झारखण्ड क्षेत्र को शोषण का अड्डा बनाया जा रहा है। बड़ी–बड़ी कम्पनियों के द्वारा किस प्रकार भूमि अधिग्रहण करके साम्राज्य स्थापित किया जा रहा है। स्थानीय मुद्दे और हित से उनका कोई लेना देना नही है। बस इस क्षेत्र की खनिज सम्पदा का लूट खसोट करना है। ए. के. राय इस स्थिति को आंतरिक उपनिवेशवाद कहते हैं। असमान विकास झारखण्ड क्षेत्र की मुख्य समस्या है। यह क्षेत्र क्षेत्रिय असमानता और शोषण का प्रमुख अड्डा बना हुआ है इसलिए झारखण्ड आन्दोलन पर विचार करने से पूर्व भारत में असमान विकास, जातिगत समस्या तथा आंतरिक उपनिवेशवाद के सवाल पर नजर डालनी होगी।[2] ए. के. राय कहते हैं की झारखण्ड आन्दोलन केवल पृथकतावादी आन्दोलन नहीं है, अपितु उससे अधिक यह एक समाजवादी आन्दोलन है। इस प्रकार ए. के. राय ने झारखण्ड आन्दोलन को विचारधारात्मक आधार प्रदान करते हुए उसे समाजवादी आन्दोलन से जोडा। क्षेत्रिय असमानता, असमान विकास, विकृत राष्ट्रीयता, जातिगत समस्या, वर्ग शोषण तथा आर्थिक शोषण जैसे प्रमुख मुद्दों को झारखण्ड आन्दोलन का मूल कारण बताया। ए. के. राय अन्य साम्यवारी विचारकों से काफी मामलों पर अलग राय रखते थे। जहाँ साम्यवादी पार्टियाँ हिसांत्मक राजनीति में विश्वास करती थी वे अहिसांत्मक तरीकों से क्रांति की वकालत करते थे। वोट के जरिये क्रांति की बात करते थे। उनका इस पर एक लेख बड़ा प्रसिद्ध हुआ “Vote ant Revolution” जो फ्रंटियर में छपा। इसके छपने के बाद से ही ए. के. राय और सीपीएम में दूरी बढ़ने लगी और इसका परिणाम हुआ की ए. के. राय ने पार्टी छोड दिया। एक अन्य कारण था जहाँ साम्यवादी पार्टियाँ झारखण्ड निर्माण का विरोध कर रही थी वहीं ए. के. राय ने खुले दिल से झारखण्ड आन्दोलन को न केवल समर्थन दिया अपितु आन्दोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता रहे।[3]

70–80 के दशक में ए. के. राय मे और उनके समर्थकों ने मिलकर मजदूरों को संगठित किया और कोल माफियाओं का मुकाबला करने के लिये पारम्परिक हथियार तीर–धनुष का इस्तेमाल किया। ऐसे हथियारों का प्रयोग करना मजदूरों में साहस पैदा करने के लिये प्रतीक के तौर पर प्रयोग किया गया था ताकि वे शोषण के विरूद्ध डटकर मुकाबला कर सकें। यह प्रतिकवादी विचारधारा गाँधीवादी विचारधारा से मेल खाता है।[4] इसके साथ–साथ ए. के. राय में स्वामी विवेकानन्द, जयप्रकाश नारायण, सुभाष चंद्र बोस आदि के विचारधारा का भी मिश्रण नजर आता है। उनकी विचारधारा अन्य साम्यवादी विचारकों से बहुत मामलों में अलग दिखता है। वे आयातित साम्यवादी विचारधारा से अलग मत रखते थे दूसरे शब्दों मे हम उनकी विचारधारा को रायवादी विचारधारा बोल सकते हैं। उन्होंने सदैव अपने आप को जमीन से जोड़े रखा। आयातित साम्यवाद को वे कभी जस के तस नही मानते दिखते हैं। स्थानीयता तथा क्षेत्रिय आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर बहुत सारे बदलाव किये और ऐसी विचारधारा का विकास किया जो तात्कालिन झारखण्ड की परिस्थितियों के लिये उपयुक्त थी।

आंतरिक उपनिवेशवाद

झारखण्ड में आतरिक उपनिवेशवाद के अवधारणा के जनक ए. के. राय थे। उन्होंने आंतरिक उपनिवेशवाद की अवधारणा विकसित करते हुए झारखण्ड की माँग को सही ठहराया और यह बताया कि झारखण्ड आन्दोलन को किस कारण समाप्त नही किया जा सकता है। उनका कहना था – झारखण्ड की असली ऊर्जा झारखण्डी भावना है इसलिये सारे झारखण्डी नेताओं को खरीद कर भी झारखण्ड आन्दोलन को समाप्त नहीं किया जा सकता और अंत में झारखण्ड राज्य का निर्माण करना पडेगा।

झारखण्ड राज्य निर्माण से पूर्व भी इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में उद्योग–धंधे लगे हुए थे। सार्वजनिक सम्पति का बड़ा हिस्सा इस क्षेत्र में निवेश किया गया था। बोकारो स्टील प्लांट, एचईसी, डीवीसी, सीसीएल, बीसीसीएल, सिंदरी खाद कारखाना आदि बहुत सारे उसके उदाहरण हैं लेकिन तमाम विकास बाहर से आये हैं। झारखण्ड विकसित लोगों का चारागाह बनता रहा। इससे झारखण्ड के लोगों का कोई विकास नही हुआ बल्कि उसके उल्ट उन्हे विस्थापन और शोषण का दंश झेलना पड़ रहा है।[5] ए. के. राय कहते थे – झारखण्ड के लोग कभी भी उस

थोपे गए विश्वास को नही स्वीकारा बल्कि इस विकास से नफरत करती है जिस विकास में उनकी कोई भागीदारी नहीं। किसी भी क्षेत्र का सम्पूर्ण विकास उस क्षेत्र के विशेष जन–समुदाय के सहयोग के बिना नही हो सकता है। दरअसल झारखण्ड शुरू से ही एक आंतरिक उपनिवेश बन कर रहा और आंतरिक उपनिवेश एक दायरे से उपर उठकर विकास की राह पर नही चल सकता।[6] इस सवाल पर झारखण्ड के वरिष्ठ पत्रकार विनोद कुमार ने उनसे एक मुलाकात में पूछा था कि इसका समाधान क्या है? इस पर ए. के. राय का जवाब था– इसका समाधान तभी हो सकता है जब झारखण्ड के लिये अब तक लड़ने वाले सही रूप से झारखण्डी भावना से जुड़े लोग सही राजनीतिक दिशा के साथ नेतृत्व में आये लेकिन मूल समस्या है यह है कि जो लोग झारखण्ड के लिये लडे उनका झारखण्डी भावना और संस्कृति से लगाव है पर उन्हें विकास की सही दिशा का ज्ञान नहीं है। दूसरी तरफ जिसके पास उसका ज्ञान है, समझ है, उनमें झारखण्डी भावना और संस्कृति से कोई लगाव नहीं है। वह दिशा क्या है? वह दिशा है समाजवादी।[7]

आंतरिक उपनिवेशवाद की अवधारणा को ए. के. राय ने अपनी पुस्तक झारखण्ड और लालखण्ड में विस्तार से समझाया है। आंतरिक उपनिवेशवाद के उन्होंने तीन आधार बताए हैं – वर्ण व्यवस्था, क्षेत्रिय असमानता तथा आर्थिक असमानता। वर्ण व्यवस्था आंतरिक उपनिवेशवाद का प्रथम आधार है जिसने हजारों साल से शारीरिक श्रम को मानसिक श्रम से अलग कर समूचे उत्पादकवर्ग को एक दलित समाज के रूप में रख दिया है। आज देश भर में आदिवासी, हरिजन, दलित तथा अल्पसंख्यकों पर आये दिन अत्याचार एक साम्प्रदायिक रंग ले लेता है। सामाजिक अलगाव के साथ शोषण उसका मुख्य कारण है। भारत में भी शोषण का आधार सामाजिक है और बर्बरता का जो चरित्र उभर कर सामने आता है, शोषण का चरित्र औपनिवेशिक नहीं होने से वह हो ही नही सकता। अंग्रेजी सरकार ब्रिटेन में जिस काम को करने में शर्माती थी वही काम भारत में बिना किसी संकोच के करती थी। उसी प्रकार से पुलिस जो काम किसी सवर्ण गाँव में सोच भी नही सकती थी वही किसी आदिवासी, दलित गाँव में बिना किसी संकोच के करती है क्योंकि वे उनको अपने समाज का अंग मानते ही नहीं है।[8]

आंतरिक उपनिवेश का दूसरा आधार क्षेत्रिय असमानता है। भारत का एक बड़ा भू–भाग जहाँ न कोई बंदरगाह और न ही बड़ा मैदानी इलाका है। जंगल, झाड, नदी, झननों तथा पर्वत–पठारों का इलाका छोटे–बड़े क्षेत्र समतल क्षेत्र को आधार बना कर देश के वृहद जनसमुदाय रहते हैं, जो आज क्षेत्रिय असमानता के शिकार हैं, वे आज शोषण और बर्बादी के द्वारा शोषित है। जिस प्रकार हिन्दुस्तान अंग्रेजी साम्राज्य का सबसे बड़ा उपनिवेश था उसी रूप में झारखण्ड हिन्दुस्तान के विभिन्न आंतरिक उपनिवेश में सबसे बड़ा आंतरिक उपनिवेश है इसलिये झारखण्ड का मुक्ति आन्दोलन एक सर्वभारतीय राजनैतिक महत्व को लेकर चुनौती के रूप में आया है।[9]

आंतरिक उपनिवेश का तीसरा आधार आर्थिक असमानता है जो देश में दूषित पूंजीवादी व्यवस्था के साथ अमीरी–गरीबी की अलग समस्या उत्पन्न कर हमेशा तनाव का कारण रहा है। पूंजीवाद ने हर देश में आर्थिक विषमता को बढ़ाया है और वर्ग संघर्ष को तेज किया है। झारखण्ड में सार्वजनिक क्षेत्र का भी चेहरा पूंजीवादी व्यवस्था के समान ही है। यहाँ उद्योग कॉलोनी बनाते है, समाज के अंग नहीं बनते। यहाँ प्रबंधन ने सिर्फ आर्थिक रूप से ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक हर प्रकार से खुद को अलग रखकर अपने शोषण के चरित्र को औपनिवेशिक बनाये रखा है।[10] भारत में झारखण्ड सामान्य तौर पर दलितों का निवास स्थान है। यह शोषित और पीडित जनता की जन्मभूमि तथा कर्मभूमि है। जहाँ लोग आर्थिक, सामाजिक तथा क्षेत्रिय शोषण के शिकार हैं एवं जो भारत के भीतर सबसे बड़ा आंतरक उपनिवेश है। नेता जो भी कहे, संगठन जो भी हो झारखण्ड आन्दोलन मृत्यूहीन है क्योंकि यह हिन्दुस्तान के दलितों के मुक्ति आन्दोलन तथा उसके भविष्य से जुड़ा हुआ है।[11]

इस प्रकार ए० के० राय ने आंतरिक उपनिवेशवाद की अवधारणा का विकास करके झारखण्ड आन्दोलन में बौद्धिक क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने झारखण्ड राज्य का निर्माण क्यो जरुरी है उस पर खुलकर बहस छेड़ी और उसका वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया।

झारखण्ड बनाम लालखण्ड

झारखण्ड आन्दोलन को वैचारिक आधार प्रदान करते हुए ए. के. राय ने उसे मार्क्सवादी आधार प्रदान करने का प्रयास किया। बिनोद बिहारी महतो, शिबू सोरेन तथा ए. के. राय ने मिलकर झारखण्ड आन्दोलन को गति प्रदान की। मार्क्सवादी विचारक ए. के. राय ने इस मंच पर वर्गीय चिंतन आरोपित करते हुए झारखण्ड को लालखण्ड के रूप में बदलने का प्रयास किया। ए. के. राय ने झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की स्थापना के आस–पास ही मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) की स्थापना की थी और आन्दलन को मार्क्सवादी रंग देने का प्रयास किया।[12]

ए. के. राय ने अपनी पुस्तक 'झारखण्ड और लालखण्ड' में उस विषय पर चर्चा करते हुए लिखा है – झारखण्ड के नाम पर बहुत सारी पार्टियाँ और बहुत सारे संगठन के अथक प्रयास के बाद भी झारखण्ड आन्दोलन को आगे नही बढ़ा पाये। वहीं झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने बस कुछ ही दिनों के अंदर उसे राष्ट्रीय सवाल के रूप में बदल दिया। इसका प्रमुख कारण है[13]:

- उत्तर पूर्वांचल के आदिवासी इलाके के विपरीत झारखण्ड भारत का औद्योगिक केन्द्र है।
- झारखण्ड आन्दोलन एक राजनैतिक आन्दोलन है व किसी भी औद्योगिक केन्द्र में राजनैतिक आन्दोलन आगे नहीं बढ़ सकता जब तक मजदूर वर्ग उसमे भाग न ले।
- मजदूर वर्ग कभी भी आगे बढ़कर राजनैतिक आन्दोलन में भाग नही लेता जब तक उसका कोई स्पष्ट समाजवादी लक्ष्य न हो।
- कोई भी समाजवादी लक्ष्य मार्क्सवाद–लेनिनवाद तथा लाल झण्डे के आधार पर ही हो सकता है।
- आदिवासी, हरिजन तथा पिछडे समाज को अलग राज्य के जरिये इस उत्थान के आन्दोलन को कारगर बनाने के लिये आम गरीब जनता के शोषण मुक्ति के आन्दोलन के साथ शामिल करना होगा जो हरे और लाल झण्डे की मैत्री से ही सम्भव हो सकता है।

ए. के. राय आगे लिखते है शिबू सोरेन आदिवासी समाजवाद के प्रतीक हैं जिसमे सारे समाज का भविष्य जुड़ा है। यही कारण कि वर्तमान समय में बहु संख्या में मजदूर भी शिबू सोरेन के साथ जुड़े हुए हैं, वहीं श्री होरो के साथ कम और बागुन सुम्ब्रई के साथ एक भी नही। समाजवादी राजनीति को शिबू सोरेन यदि सही वैज्ञानिक आधार पर विकसित कर पाये तो पूरे भारत की दलित–पीड़ित जनता उन्हें राष्ट्र–नेता के रूप में मानने के लिये आगे बढ़ेगी और उस हिसाब से शिबू सोरेन भारत के उपर लाला सितारा बनने की सम्भावना रखते हैं और हरा झण्डा 'लाल भारत' का जन्मदाता होगा।[14]

नयी जन–क्रांति

झारखण्ड आन्दोलन पर विचार सामाजिक लक्ष्यों को ध्यान में रखकर ए. के. राय ने नयी जनक्रांति की विचारधारा का विकास किया। यह मुख्य रूप से बहस के लिये एक राजनैतिक दस्तावेज था। उसके माध्यम से उन्होंने झारखण्ड निर्माण पर नई बहस छेड़ दी। झारखण्ड आन्दोलन को उन्होंने वर्ग समस्या के साथ जोड़कर देखने का प्रयास किया। ए. के. राय इस पर लिखते हैं कि भारत एक संक्रमण काल से गुजर रहा है और देश के भीतर लगातार संकट और शासक दल द्वारा किसी भी समस्या के समाधान में विफलता ने साबित किया है कि संकट किसी पार्टी या व्यक्ति से संबंधित नहीं है, बल्कि वर्ग से है।[15] इस प्रकार ए. के. राय ने झारखण्ड में जो स्थिति विद्यमान थी उसके लिये वर्ग समस्या और पूंजीवादी व्यवस्था को सबसे अधिक जिम्मेवार मानते हैं। इस व्यवस्था से निपटने के लिये और झारखण्ड मे नयी क्रांति के आवाह्न के लिये मार्क्सवादी समन्वय समिति का गठन किया। मार्क्सवादी समन्वय समिति का एक अन्य मुख्य लक्ष्य 'मार्क्सवाद' का भारतीयकरण करना था। मासस के सफलता के बारे नयी जनक्रांति में उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि मासस ने बिहार के कुछ महत्वपूर्ण आन्दोलनों में भाग लिया और राज्य की राजनीति पर गहरी छाप छोड़ी। मुख्य रूप से दक्षिणी बिहार के औद्योगिक क्षेत्र धनबाद, हजारीबाग, गिरिडीह, रामगढ़ आदि में कोल मजदूरों के माफिया विरोधी आन्दोलन में नेतृत्व देना और उस लड़ाई

को वहाँ के मूलवासियों व आदिवासियों के उत्थान तथा आत्मप्रतिष्ठा की लड़ाई के साथ जोड़ना। यह प्रक्रिया बाद में विकसित होकर आगे नए रूप में झारखण्ड आन्दोलन को जन्म दिया और झारखण्ड मुक्ति मोर्चा नामक संगठन सामने लाया जो आज पुरे भारत में परिचित है।[16] जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में इंदिरा गाँधी की तानाशाही सरकार के विरोध में युवा तथा जन आन्दोलन में भी मार्क्सवादी समन्वय समिति की मुख्य भूमिका थी। इसके अलावे मासस ने शराब बन्दी आन्दोलन, दहेज विरोधी आन्दोलन, सूदखोरी के विरोध में आन्दोलन आदि अन्य समाज सुधार आन्दोलन को लाल झण्डा के नेतृत्व में एक व्यापक जन आन्दोलन का नेतृत्व किया और झारखण्ड में नयी जनक्रांति का आगाज किया। नयी जनक्रांति के माध्यम से झारखण्ड आन्दोलन को काफी बल मिला। सामाजिक सुधार के साथ–साथ किसान, मजदूर विस्थापित तथा आम–जन को आन्दोलनमुखी बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष

ए. के. राय ने बौद्धिक स्तर पर झारखण्ड आन्दोलन को मजबूती प्रदान की। उन्होंने झारखण्ड आन्दोलन को एक समाजवादी आन्दोलन के रूप में बदल कर देखने की एक नयी विचारधार दी। वास्तव में यह आने वाले समय में सही साबित हुआ। उन्होंने कहा की झारखण्ड के निर्माण से समस्याएँ खत्म नही होगी बल्कि सामाजिक क्रांति का होना आवश्यक है। झारखण्ड की सही दिशा समाजवाद है, पूंजीवाद नही। गैर उत्पादक वर्ग के हाथों मे झारखण्ड सिर्फ झगडाखण्ड बनकर रह जायेगा।

संदर्भ सूची

1. झा, सचिन शेखर; कुंदन के. आर. जे. (2021) इंडियन कामरेड ए. के. राय, नवजागरण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 29।
2. कश्यप, अभिषेक (2021) *कामरेड ए. के. राय समग्र,* इंडिया रेलिग, दिल्ली, पृ. 268।
3. *झा, सचिन शेखर, कुंदन, के. आर. जे.,* 'पूर्वोक्त' पृ. 30।
4. https://www.Nationalheraldindia.com/opinion/whenGandhi&marx-a-posthumous-tribute-to-parliamentarian-ak-ray-13Oct, 2019,10:00 AM, Accessed on 12/12/2025.
5. https//sablog-in/real-stars&ofindependent&india-June%20202018767/, Accessed on 08/12/2025.
6. वही।
7. वही।
8. कश्यप अभिषेक, 'पूर्वोक्त' पृ. 334।
9. वही, पृ. 10–335।
10. वही, पृ. 336।
11. वही, पृ. 339।
12. दत्त, बलबीर (2014) *कहानी आरखण्ड आन्दोलन की इतिहास से साक्षात्कार,* क्राउन पब्लिकेशन राँची, पृ सं०–226
13. वही, पृ. 228।
14. कश्यप अभिषेक, पूर्वोक्त, पृ. 80–394।
15. वही, पृ. 245।
16. वही, पृ. 250।

****